॥ श्रीगुरु अवधूत॥

पद १

(राग: मांड - ताल: भजनी)

प्रभु जवळी असता असता मग चिंता मज कां?।।धु०।। कोण कुणाची कसली सत्ता। कोण स्वतः आणि कोण पराचा। हा विचार मज कां? मग चिंता मज कां?।।१।। सुखादि दुःख प्रपंच यातना। वित्तादि विषयाचीं ती वासना। कल्पुनी मग भ्रमूं कां? मग चिंता मज कां?।।२।। योगादि शक्ती शाक्तोपासना। मंत्रादि यंत्राची ती साधना। साधनी मी रमू कां? मग चिंता मज कां?।।३। वेदादि श्रुति उपनिषद पुराणा। देव तो एकचि रूपें नाना। संशय मनीं करूं कां ? मग चिंता मज कां ?।।४।। पुण्यादि पापाची ती भावना। सिद्ध सकलमतप्रभुच्या चरणा। अर्पुनी मग भय कां? मग चिंता मज कां ?।।४।।